झूठी ख्याति

एक जगह पर वेदिका नाम की एक धनी स्त्री रहती थी। वह बहुत शांत और सौम्य थी और इसलिए वह दूर - दूर तक प्रसिद्ध थी।

उसके घर में एक नौकर था। उसका नाम विशाल था। वह बहुत ही कुशल और वफादार था। एक दिन नौकर ने सोचा, " सभी लोग कहते हैं मेरी मालकिन बहुत ही सौम्य है। वह कभी किसी पर गुस्सा नहीं होती हैं। ऐसा भला कैसे हो सकता है ? हो सकता है मैं अच्छा काम करता हूँ इसलिए वह मुझपर गुस्सा नहीं होती होंगी। मुझे यह पता लगाना होगा कि वह सच में गुस्सा होती हैं या नहीं। "

अगले दिन नौकर काम पर थोड़ा देर से आया। महिला ने पूछा, " आज देर कैसे हो गयी ? " इसपर वह बोला, " कोई ख़ास बात नहीं थी। " महिला ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसे नौकर की बात अच्छी नहीं लगी।

दूसरे दिन नौकर फिर से देर आया। महिला ने फिर से उससे पूछा, " आज देर क्यों हुई ? " इसपर नौकर ने कहा, " कोई ख़ास बात नहीं। " महिला को बात बहुत बुरी लगी। वह नाराज हो गई, लेकिन कुछ नहीं बोली।

तीसरे दिन नौकर फिर से देर से आया। महिला बहुत क्रोधित हो गयी और उसे एक डंडा दे मारा। इससे नौकर का सर फट गया और वह तेजी से बाहर की तरफ भागा। यह बात आग की तरह बाहर फ़ैल गयी और वेदिका की ख्याति मिट्टी में मिल गयी।

सच्ची प्रार्थना

एक पुजारी थे। लोग उनमें अत्यंत ही श्रद्धा और विश्वास रखते थे। पुजारी प्रतिदिन मंदिर जाते और दिनभर वहीँ रहते। सुबह से ही लोग मंदिर आने लगते और मंदिर में सामूहिक प्रार्थना होती थी।

जब प्रार्थना संपन्न हो जाती तो पुजारी उन्हें उपदेश देते। उसी नगर में एक गाड़ीवान रहता था। वह दिनभर अपने काम में व्यस्त रहता था। इसी से उसकी रोजी -रोटी चलती थी।

यह सोचकर उसे बहुत दुःख होता था . वह सोचता था, " मैं हमेशा अपना पेट पालने लिए काम - धंधे करता रहता हूँ, मंदिर नहीं जा पाता हूँ, जबकि बहुत सारे लोग मंदिर जाते हैं। मुझ जैसा पापी शायद ही इस होगा। "

वह आत्मग्लानि मंदिर जाकर पुजारी को यह बात बतायी और उसने पुजारी जी से पूछा, " मैं पूजा - पाठ ना कर पाने की वजह से बहुत ही दुखी हूँ। क्या अपना काम छोड़कर नियमित मंदिर में प्रार्थना करना आरम्भ कर दूँ ? "

पुजारी ने गाड़ीवाले की बात बड़े ही ध्यान से सुनी और उसके बाद उन्होंने कहा, " अच्छा यह बताओ, तुम रोज ही अपनी गाडी से तमाम लोगों को एक गाँव से दूसरे गाँव में पहुंचाते हो तो क्या तुमने कभी किसी बूढ़े, अपाहिज और दीन - दुखियों को मुफ्त में एक गाँव से दूसरे गाँव तक छोड़ा है ? "

इसपर उस गाड़ीवाले ने कहा, " ऐसा अवसर बहुतों बार आता है। जब ऐसे असहाय लोगों को मुफ्त में यात्रा करवाता हूँ। " यह सुनकर पुजारी बहुत ही खुश होते हुए बोले, " तब तुम्हे अपना व्यवसाय छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे असहाय लोगों की सेवा करना, किसी भी तरह से उनकी मदद करना ही सच्ची ईश्वर भक्ति है। तुम सबसे अधिक ईश्वर की भक्ति कर रहे हो। " पुजारी की बात सुनकर वह गाड़ीवान बहुत खुश हुआ और वह फिर से गरीबों की सेवा में और अधिक मन लगाने लगा।